DR. Ratan Singh

35

GLOBALIZATION AND ITS IMPACT ON INDIAN CULTURE AND SOCIAL VALUES

138

वैश्वीकरण एवं भारतीय संस्कृति तथा सामाजिक मूल्यों पर इसका प्रभाव

EDITOR-IN-CHIEF
Dr. Deepti Bajpai

EDITORS
Dr. D. C. Sharma, Dr. Kishor Kumar
Dr. Jeet Singh, Dr. Meenakshi Lohani, Dr. Vineeta Singh

138-139

Km. MAYAWATI GOVT. GIRLS POST GRADUATE COLLEGE
BADALPUR (GAUTAMBUDH NAGAR) U.P.

ISBN : 978-93-88216-17-1

Scanned by CamScanner

कवि नागार्जुन की कविताओं में वैश्विक सन्दर्भ 148

डॉ. बॉबी यादव

विश्व साहित्य पर वैश्वीकरण के प्रभाव 154

डॉ. जीत सिंह, मनीश कुमार

वैश्वीकरण का भारतीय वर्ण व्यवस्था पर प्रभाव 164

डॉ. रतन सिंह

वैश्वीकरण एवं भारतीय समाज 167

डॉ. रूचि पाण्डेय

वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति एवं समाज पर इसके प्रभाव 170

डॉ. अंजली मलिक

भूमंडलीकरण की संस्कृति में स्त्री मुक्ति का स्वप्न... 173

डॉ. इन्दू कुमारी

वैश्वीकरण के दौर में भारतीय महिला 181

अन्जना कुमारी

वैश्वीकरण का अच्छा, बुरा और विद्रूप पक्ष 187

उर्मिला कुमारी

वैश्वीकरण: नारी के सन्दर्भ में वैदिक दृष्टिकोण 193

डॉ. राखी कौशिक

Scanned by CamScanner

Proceeding

वैश्वीकरण का भारतीय वर्ण व्यवस्था पर प्रभाव

डॉ. रतन सिंह
असि. प्रो.-बी.एड.
कु.मा.रा.म.स्ना.महा.
बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

वैश्वीकरण का सामान्य अर्थ विश्व की सीमाओं के खत्म होने से लगाया जा सकता है। इसी के चलते एम.सी. लुहान ने ग्लोबल विपेज जैसी अवधारणा का प्रतिपादन किया।

वैश्वीकरण का सामान्य शुरुआत आर्थिक पक्षों के रूप में ही की जाती है, जिसके विश्व व्यापार संगठन जैसे संगठनों का विशेष योगदान रहा है, जो प्रत्येक विश्व के देशों के बाजारों को एक दूसरे के लिए खोलने का प्रयास करता है। जब एक दूसरे देश की सीमाएँ व्यापार के लिए खुलेंगी तो इससे सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदान-प्रदान की सम्भावनाएँ खुल जाती हैं। परन्तु फिर भी वैश्वीकरण को सामाजिक की जगह आर्थिक क्रियाकलापों के रूप में अधिक महत्त्व दिया जाता है। नोमन चौमस्की का तर्क है कि सैद्धान्तिक रूप से वैश्वीकरण शब्द का उपयोग आर्थिक वैश्वीकरण के नव उदार रूप का वर्णन करने में किया जाता है। वैश्वीकरण के प्रारम्भिक रूपरोमन, पर्थियन, काल के पाये जाते हैं। भारत की सीमा से गुजरने वाला मार्ग, जिसको चीन द्वारा पुनः विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। वैश्वीकरण का एक उदाहरण है। मुस्लिम काज एवं उपनिवेशकाल में वैश्वीकरण का एक नया प्रकार सामने आया, जिसमें व्यापार के साथ धर्म एवं संस्कृति के विस्तार को भी महत्त्व दिया गया।

जहाँ मुस्लिम साम्राज्य ने अधिकतर दुनिया में इस्लाम के प्रचार-प्रसार का कार्य किया, वहीं मुस्लिम साम्राज्य के कमजोर पड़ने के बाद उपनिवेश काल में ईसाई मशिनरियों द्वारा यह किया जाने लगा।

इस प्रकार से यदि कहा जाये कि बेशक वैश्वीकरण के प्रारम्भ की प्रक्रिया व्यापार होता है, लेकिन यहां समाज एवं संस्कृति को प्रभावित करने की तरफ बढ़ता चला जाता है।

भारतवर्ष जो लगभग 6500 जातियों, अनेक धर्मों व मान्यताओं का देश है। कोई भी विश्व की ऐसी शक्ति नहीं रही, जिसने भारत में प्रवेश न किया

ISBN : 978-93-80216-17-1

Scanned by CamScanner

हो तथ यहाँ की सामाजिक व्यवस्था में हस्तक्षेप न किया है। चाहे वे आर्य हो. युनानी हो, पहलव हो, कुषाण हो, मुस्लिम या ईसाई हो। सबने भारत की सामाजिक व्यवस्था में थोड़ा बहुत हस्तक्षेप किया है। इसलिए अगर यह कहा जाये कि भारत में सम्पूर्ण विश्व की विशेषताएँ मिल सकती हैं तो यह गलत नहीं होगा। भारतीय सामाजिक व्यवस्था की जहाँ तक बात करें, यह एक बन्द सामाजिक व्यवस्था रही है। जिसमें वर्ण को जन्म के आधार पर स्थायी कर दिया जाता है। एवं वर्णों को भी जातियों में विभक्त कर प्रत्येक वर्ण एवं जातियों को उनके द्वारा अपनाये जाने वाले कार्यों में विभक्त कर दिया जाता है। लेकिन वैश्वीकरण के द्वारा संस्कृतियों के आदान प्रदान से भारतीय व्यवस्था की ये मान्यताएं टूटने लगी, जिनका अधान सर्वप्रथम एम.एन. श्रीनिवास ने किया एवं बताया कि किस प्रकार भारत में जातियों का संस्कृतिकरण हो रहा है।

श्रीनिवास बताते हैं कि विश्व की सांस्कृतियों से प्रभाव भारत में नीची समझी जाने वाली जातियों ने स्वयं का सर्वधन करना प्रारम्भ किया एवं वह स्वयं को अपेक्षाकृत ऊँचे वर्ण में स्थापित करने को प्रयासरत रहती हैं, जिसे उन्होंने कुर्ग जाति के अपने अध्ययन में बताया। आजादी के बाद भारत की प्राचीन परम्परा वसुधैव कुटुम्बकम् का सपना साकार होते दिखने लगा, जिसका प्रभाव वैश्विक स्तर पर किये गये अविष्कारों, सूचना प्रणालियों एवं यातायात साधनों का भारत के प्रत्येक वर्ग पर पड़ने लगा एवं जो वर्ग एवं जातियां अपने को एक प्रकार के सामाजिक एवं धार्मिक बन्धनों से बाहर निकालने के विषय में सोच भी नहीं सकती थी। सूचना एवं यातायात क्रांति से एक दूसरे के निकट आने से, सम्पूर्ण विश्व की व्यवस्थाओं की जानकारी करने से स्वयं को बन्धनों से बाहर निकालने का प्रयास करने लगी एवं धार्मिक आधारों पर जिन कार्यों जैसे समुद्र यात्रा निषेध, विधवा विवाह निषेध, बालविवाह, पिछड़ी जातियों को शिक्षा से वंचित रखना एवं वर्णों के आधार पर कार्य विभाजन उसके विरुद्ध सामाजिक एवं धार्मिक आन्दोलन चलाकर इनसे मुक्ति पाने का प्रयास किया।

मार्टिनकिंग लूथर व नेल्सन मण्डेला के विचारों से भारत के जनमानस को प्रभावित होते देखा जा सकता है।

सामाजिक व्यवसायी के आखिरी पायदान पर स्थित जातियों को भी वैश्वीकरण ने एक ताजगी प्रदान करने का कार्य किया जिसमें शिक्षा को सबके लिए उपलब्ध कराया। यही नहीं संविधान के 86 वें संशोधन द्वारा 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य एवं मुफ्त शिक्षा का प्रावधान किया गया, जिसके विश्व बैंक

ISBN : 978-93-80216-17-1

Scanned by CamScanner

द्वारा धनराशि उपलब्ध करा कर वैश्विक संस्था का दायित्व निवर्हन किया गया।

भारतीय सामाजिक व्यवस्था में बदलाव का अन्दाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि व्यापार में भी आज प्रत्येक जाति एवं धर्म के लोग हैं। एक और जहां डिक्की (दलित वाणिज्य उद्योगमण्डल महासंघ) जैसी संस्थाएँ भी बनी हैं।

भारत के प्रत्येक वर्ण एवं जाति से आज राजनेता विद्वान, शिक्षाविद्, व्यापारी एवं सभी जगहों पर प्रतिनिधित्व करने वाले लोग हैं। यह सब विश्व के समस्त देशों से वैश्वीकरण के माध्यम से प्रेरणा स्वरूप भी कहा जा सकता है।

अतः हम कह सकते हैं कि वैश्वीकरण ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था के उन तमाम बन्धनों को तोड़कर रख दिया है, जिनके चलते यहां की व्यवस्था में कुछ लोगों को विशेष अधिकार प्राप्त थे एवं कुछ को कुछ भी नहीं।

आज सामाजिक व्यवस्था के अन्तिम पायदान पर बैठा व्यक्ति भी रविदास एयर लाईन्स को चलाने के लिए स्वतंन्त्र है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची-

- आहूजाराम- सामाजिक समस्याऐं-रावत पब्लिकेशन- 2012.
- जोसेफ-सोशल प्रोब्लम-प्रिन्टिसहालइंगलवुड, न्यूजर्सी- 2007.
- चन्द्रा विपिन-कम्यूनिल्जमइन मार्डन इण्डिया, विकास, नई दिल्ली-1998.

ISBN : 978-93-80216-17-1

Scanned by CamScanner